THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–2, Issues– 4 October- December: 2025

प्रेमचन्द के अप्राप्य साहित्य का मूल्यांकन

डॉ पद्मावती अंगङ
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी
सरकारी मॉडल डिग्री कॉलेज,पियोंग ,
नामसाई , अरुणाचल प्रदेश।
Email Id. padmaongong83@gmail.com

शोध सार

डॉ कमलकिशोर गोयनका 'प्रेमचंद विशेषज्ञ' के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उन्होंने प्रेमचंद पर युगांतकारी कार्य किया है। प्रेमचंद के साहित्य संरक्षण और संवर्धन में उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। गोयनका ने पहली बार प्रेमचंद के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को कालक्रमानुसार प्रस्तुत किया है। उन्होंने प्रेमचन्द साहित्य पर जो अद्भुत और विलक्षण कार्य किया है – वो मौलिक और प्रामाणिक है। नवीन तथ्य-उद्घाटन के साथ-साथ उन्होंने प्रेमचन्द के रचनात्मक और महत्वपूर्ण आयामों को प्रेरक और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। प्रेमचंद पर किया गया उनका यह महत्वपूर्ण कार्य विद्वानों , शोधार्थियों एवं युवा-पीढ़ियों को प्रेरित करता है। प्रेमचंद के संबंध में उन्होंने अप्रकाशित, अज्ञात और अप्राप्य सामग्री एकत्र की। गुम दस्तावेजों को खोजा, पुरानी पत्र-पत्रिकाओं में बिखरी जानकारी को एकत्र किया और नये तथ्यों एवं नयी जानकारी हमारे सम्मुख प्रस्तुत किया हैं।

बीज शब्द : *प्रेमचंद, साहित्य, कालक्रमानुसार, मौलिक, प्रामाणिक, अज्ञात, अप्राप्य, सामग्री, दस्तावेज।*

प्रस्तावना

प्रेमचन्द हिंदी साहित्य जगत के सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार हैं। बहुत से विद्वानों ने उन पर शोध कार्य किया परन्तु उन सभी शोधार्थियों में डॉ कमलकिशोर गोयनका का विशिष्ट .स्थान है। प्रेमचंद के हजारों पृष्ठों के अज्ञात साहित्य को खोजकर उन्होंने हिंदी में पहली बार उनकी कालक्रमानुसार जीवनी लिखी है। गोयनका ने प्रथम बार 'प्रेमचन्द कहानी रचनावली' के अंतर्गत प्रेमचन्द की उपलब्ध सम्पूर्ण कहानियों को कालक्रमानुसार प्रस्तुत किया है। प्रेमचंद के उपन्यासों का शिल्पविधान-, प्रेमचंद कुछ संस्मरण, प्रेमचंद (पॉकेटबुक), प्रेमचंद और शतरंज के खिलाड़ी, प्रेमचंद अध्ययन की नई दिशाएँ, रंगभूमि नए आयाम, प्रेमचंद विश्वकोश (खंड एक) 'प्रेमचंद का जीवन', 'प्रेमचंद विश्वकोश' (खंड-दो) 'प्रेमचंद का जीवन', प्रेमचंदक जीवनीचित्रात्म -, 'प्रेमचंद का अप्राप्य साहित्य' (खंड दो), प्रेमचंद की हिंदीउर्दू कहानियाँ-, प्रेमचंद रचना संकलन, प्रेमचंद के नाम पत्र, प्रेमचंद देशप्रेम की कहानियाँ-, प्रेमचंद बाल साहित्य समग्र, प्रेमचंद अप्राप्त कहानियाँ, प्रेमचंद पत्र कोश प्रेमचंद कहानी रचनावली-(छह खंड), प्रेमचंद अनछुए प्रसंग, प्रेमचंदवाद,

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–2, Issues– 4 October- December: 2025

प्रतिवाद और समवाद, प्रेमचंद मोनोग्राफ, प्रेमचंद सम्पूर्ण दलित कहानियाँ, प्रेमचंद प्रतिनिधि संचयन, प्रेमचंद कालजयी कहानियाँ, प्रेमचंद की कहानियों का कालक्रमानुसार अध्ययन,'गोदान' प्रथम संस्करण, उर्दू 'गऊदान' हिंदी लिप्यंतरण आदि कृतियाँ है जो डॉ . कमलकिशोर गोयनका की अक्षय कीर्ति का आधार हैं।

विवेचन

प्रेमचंद के अज्ञात –अप्राप्य साहित्य को प्रथम बार प्रकाश में लाने का श्रेय अमृतराय जी को जाता है। सन् तक की खोज में अमृतराय ने प्रेमचंद का विपुल अज्ञात एवं 1962 से सन् 1957 .से डॉ 1962 त किया। अमृतराय के कार्य से प्रेरित होकर सन् पाठकों के सामने प्रस्तु साहित्यअप्राप्य का कार्य प् रचनाओं पर शोधगोयनका ने प्रेमचंद की अप्राप्यरारंभ किया। शोध के विषय मेंगोयनका का विचार है कि शोध की प्रक्रिया में उपलब्धियों के पश्चात् भी कुछकुछ छूट जाता है–न–, इसलिए कोई भी शोध सम्पूर्ण नहीं होता बल्कि एक शोध नये को प्रेरित करता है। प्रेमचंद – साहित्य के मर्मज्ञ समीक्षक, उनके तात–अज्ञात साहित्य के अन्वेषक तथा प्रमाणिक प्रस्तोता के रूप में डॉ कमलकिशोर गोयनका स्थापित हो चुके हैI इन्होंने लगभग पैंतालीस वर्षों की प्रेमचंद–मूल्यांकन की बहुकोणीय साधना द्वारा उनके साहित्य को एक नयी दिशा दी Iप्रेमचंद की रचनाओं की संख्या तथा प्रकाशन– कर हिंदी आलकाल को लेोचकों एवं शोधार्थियों में मतभेद होने के कारण उनकी आठदस तक – होती हैं। इसलिएप्रकाशन तिथियाँ प्राप्त'प्रेमचंद विश्वकोश' को तैयार करते समय गोयनका ने निश्चय किया कि प्रेमचंद की सम्पूर्ण ज्ञातअज्ञात–, प्राप्यअप्राप्य–, हिन्दी–काल उर्दू रचनाओं की– ने उर्दूक है। इसके लिए उन्होंक्रमानुसार सूची देना आवश्यतथा हिन्दी की सभी उपलब्ध पत्रपत्रिकाओं– की पूरी छानबीन की।इसलिए इस कोश के प्रथम भाग में उन्होंने प्रेमचंद की तिथिवार प्रामाणिक जीवनी साहित्य जगत के सम्मुख प्रस्तुत किया I इसके दूसरे खंड में प्रेमचन्द की लगभग दो हज़ार रचनाओं को अकारादि क्रम के साथ उनकी विद्यागत जानकारी रचना–काल तथा रचनाओं के सार– संक्षेप आदि को रखा गया है I

'प्रेमचंद का अप्राप्य साहित्य' के दो खंडों में डॉ कमलकिशोर गोयनका .ने प्रेमचंद के विभिन्न विधाओं की अप्राप्य एवं अज्ञात सामग्री को व्यवस्थित ढंग से संकलित किया हैI इसके प्रथम खंड में अनुवाद, उपन्यास, कहानी, दस्तावेज (अनुबंध पत्र, इन्टरव्यू,डायरी, जीवन बीमा की रसीद एवं नोटिस, बैंक खाता, प्रेमचंद एवं नियुक्ति पत्र, मनीऑर्डर की रसीद, मानहानि के मुकदमे के दस्तावेज रचनाओं की रूपरेखाएँ, विज्ञापन, सेवा पुस्तिका तथा सार्वजनिक ग्रंथमाला–) और पुस्तक रचनाएँ 192 समीक्षा के अंतर्गत–एवं दस्तावेज संकलित हैं। इसके दूसरे खंड में – प्रेमचंद के पत्र, प्रेमचंद के नाम पत्र, भूमिका लेख एवं संपादकीय तथा परिशिष्ट में रचनाएँ 497 के दोनों साहित्यत किये गये हैं। अप्राप्यवेज प्रस्तुवपूर्ण दस्तातथा महत्खंडों में कुल रचनाएँ 689 संकलित हैं, जो इतने लम्बे वर्षों तक अज्ञात एवं अप्राप्य रहकर इतिहास के गर्त में छिपी हुई थीं। कुछ ऐसी रचनाओं का भी संकलन है जो पहले प्रकाशित तो हुई थीं, लेकिन उनका पाठकों को आसानी से उपलब्ध हो पाना मुश्किल था इसलिए ऐसी रचनाओं का भी समावेश इन दोनों खंडों में किया गया है।

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–2, Issues– 4 October- December: 2025

प्रेमचंद के अप्राप्य एवं अज्ञात रचनाओं पर किया गया ये संकलन कार्य प्रेमचंद के साहित्यिक दृष्टिकोण और विचारों को अभिव्यक्त करता है। यह कहा जासकता है कि मूलतयह एक नये प्रेमचंद : से हमें परिचित कराता है, जिससे हम अनभिज्ञ थे। इन अज्ञात एवं अप्राप्य रचनाओं को पढ़कर प्रेमचंद के सृजन संसार–को समझा जा सकता है तथा प्रेमचंद को समग्र रूप में जाना जा सकता है। प्रेमचंद की अप्राप्य और अज्ञात रचनाओं के संकलन का मुख्य उद्देश्य परिलक्षित करते हुए गोयनका कहते हैं कि ये संकलित रचनाएँ पाठकों को अज्ञात प्रेमचंद से परिचित कराएंगी, जिसमें प्रेमचंद की कुछ जानीपहचानी प्रवृत्तियों के साथ अलक्षित प्रेमचंद की मूर्ति भी साकार होती प्रतीत होगी–। वास्तव में , इन अज्ञात एवं अप्राप्य रचनाओं को एक साथ रखकर ही प्रेमचंद के सृजन–संसार का एक पूर्ण चित्र उभरता है और इस संयुक्त तथा समग्र साहित्य को सामने रखकर ही हम प्रेमचंद को समग्रता में जान सकते हैं।

'प्रेमचंद का अप्राप्य साहित्य' पुस्तक के दोनों खंडों में महत्वपूर्ण हिस्सा उन नई 30 गोयनका ने खोज निकाली हैं।कहानियों का जिन्हें ये सभी कहानियाँ अमृतराय के द्वारा खोजी गयी कहानियों को छोड़कर अन्य नई कहानियाँ हैं, जिसका जिक्र उन्होंने 'गुप्तधन' की भूमिका लिखते हुए किया था कि मेरा अनुमान है कि अभी भी 30–कहानियाँ और मिलनी चाहिए। अमृतराय के 40 पत्रिकाओं की पुरानी फाइ– पत्रहिन्दी–अनुमान को ही आशा की किरण समझकर गोयनका ने उर्दूलें खोज निकालीं और बहुत एकाग्रता और लगन के साथ छान बीन शुरु की। गोयनका द्वारा खोजी गई–अज्ञात कहानियों की सूची इस प्र–अप्राप्य 30कार है –:

1. 'करिश्माइन्तिकाम–ए–' (अद्भुत प्रतिशोध)
2. 'दोनों तरफ से'
3. 'बड़ी बहन'
4. 'खौफे–रुसवाई' (बदनामी का डर)
5. 'कैफरे कर्दार' (कर्मदण्ड–)
6. 'धोखे की टट्टी'
7. 'सगे–लैला' (लैला का कुत्ता)
8. 'दारु–एतल्ख–' (कड़वी सचाई)
9. 'अपने फ़न का उस्ताद'
10. 'दरवाजा'
11. 'वियोग और मिलाप'
12. 'खूने हुर्मत' (प्रतिष्ठा की हत्या)
13. 'बाँसुरी'
14. 'प्रतिज्ञा'
15. 'आबे–हयात' (सुधारस–)
16. 'रूहे–सियाह' (कलुषित आत्मा)
17. 'रूहे–हयात' (जीवन की प्राणशक्ति–)
18. 'मोटेराम जी शास्त्री का नैराश्य'

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–2, Issues– 4 October- December: 2025

19. 'शुदिध'
20. 'सम्पादक मोटेराम जी शास्त्री'
21. 'बोहनी'
22. 'खूनी'
23. 'गमी'
24. 'स्वप्न'
25. 'खेल'
26. 'बीमार बहिन'
27. 'रंगीले बाबू'
28. 'वैराग्य'
29. 'बारात'
30. 'कातिल की माँ'
31. 'रोशनी'
32. 'एक अपूर्ण कहानी', उर्दू से, तिथि अज्ञात।

इस कहानी सूची में कहानियाँ ही प्राप्त 30 मूल रूप सेख है किन्तुकहानियों का उल्ले 32 की कहानी 16 होती हैं। क्रम संख्या'रूहे-सियाह' क्रम संख्या की कहानी 14'प्रतिज्ञा' का उर्दू अनुवाद है तथा क्रम संख्या एक शीर्षक हीन अधूरी उर्दू कहानी है। 32

अत है। 30 कहानियों की संख्याइस प्रकार प्रेमचंद की अप्राप्य :उनकी कहानियों की पट-भूमि तथा आधार भारतीय समाज के हर पहलू से संबंध रखते हैं I गोयनका ने प्रेमचंद की अज्ञात एवं अप्राप्य कहानियों की खोज कर प्रेमचन्द की भारतीय छवि को प्रस्तुत किया है Iये सभी कहानियाँ प्रेमचंद को समझने और पढ़ने के लिए महत्वपूर्ण हैं।गोयनका द्वारा प्राप्त कहानियों में 'करिश्मा-ए-इन्तिकाम' पहली कहानी है जो सन् 1911 में प्रकाशित हुई थी Iप्रेमचन्द की 'दोनों तरफ से' कहानी अछूत जातियों के सामाजिक और आर्थिक सुधार की कहानी है ।गोयनका ने प्रेमचन्द को भारतीयता से जोड़कर उन्हें भारतीय चिंतन परंपरा में व्याख्यायित किया है I उनका विचार है कि प्रेमचंद पर गांधी के प्रभाव को लेकर आज नयी दृष्टि से आलोचना करने की आवश्यकता हैIगोयनका स्पष्ट शब्दों में लिखते हैं ''प्रेमचंद पर महात्मा गांधी के प्रभाव का आकलन नये सिरे से करना होगा।''बड़ी बहन , कैफरे-कर्दार, सगे लैला ,दारू-ए-तल्ख़, अपने फन का उस्ताद आदि महत्वपूर्ण कहानियाँ हैं जो जीवन की सच्चाई से जुड़ी हुई हैं Iप्रेमचंद की इन अप्राप्य कहानियों के सर्वेक्षण एवं गहन अध्ययन से गोयनका ने कई नये तथ्य खोज निकाले हैं। प्रेमचंद के हाथों से छूटी इन कहानियों को गोयनका कमजोर और कलाहीन बिल्कुल नहीं मानते हैं। इन अप्राप्य कहानियों के उद्देश्य को व्यक्त करते हुए गोयनका का कहना है कि प्रेमचंद इन कहानियों में मनुष्य की उच्च मनोवृत्तियों तथा मूल्यों की रक्षा करते हैं ।

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–2, Issues– 4 October- December: 2025

निष्कर्ष

अज्ञात एवं अप्राप्य साहित्य का खोज कार्य अत्यंत कठिन है। डॉ कमलकिशोर .गोयनका की ये मेहनत एक संस्था के द्वारा किए गए अनथक प्रयासों, समपर्ण भाव तथा कालातीत उपलब्धियों की तरह है। प्रेमचंद के अज्ञात एवं अप्राप्य साहित्य से संबंधित प्राप्त सामग्री को उन्होंने 'प्रेमचंद अप्राप्य साहित्य' के दो खण्डों में भूमिका सहित प्रकाशित कराया है। हिन्दी साहित्य जगत को प्रेमचंद की देन की जानकारियाँ अज्ञात थीं उन्होंने उसे पाठकों तक पहुँचाया। प्रेमचंद के साहित्य एवं विचारजगत को–त करने में गोयनका की यह सबसे बड़ी उपलब्धि है। कहानीपूर्ण रूप से प्रस्तु, लेख, दस्तावेज, पुस्तक–समीक्षा, प्रेमचंद के पत्र, प्रेमचंद के नाम पत्र, अनुवाद, भूमिकाएँ और लेख एवं संपादकीय के अनुसार उन्होंने प्राप्त सामगिर्यों का वर्गीकरण किया है। गोयनका द्वारा प्रस्तुत 'प्रेमचंदका अप्राप्य साहित्य' से कई नवीन विचार साहित्य जगत के सम्मुख प्रस्तुत हुए हैं, जिससे प्रेमचंद की बनी बनाई छवि में एक नवीन रूप जुड़ता है।–संकलित 30 कहानियों एवं लेखों की प्रकाशन तिथि तथा पत्रिका का नाम उल्लेख करते हुए गोयनका ने वर्षों से विवादों के घेरे में रहे प्रेमचंद संबंधी कई प्रश्नों का प्रमाण सहित उत्तर दिया है I प्रेमचंद की रचनाओं में अभिव्यक्त विचार और सामाजिक दृष्टिकोण को गोयनका की इस खोज ने नया रूप दिया है,अतहम कह सकते हैं कि : त करने तथा एक की खोज से प्रेमचंद की पूर्ण छवि को प्रस्तु हो गये साहित्यलुप्त :प्रेमचंद के प्राय यी पहचान देने में गोयनका का यह कार्यनवीन स्थाअद्वितीय है, उललेखनीय है, स्तुत्य एवंऐतिहासिक है।

******

संदर्भ सूची –:

1. डॉ. कमल किशोर गोयनका ;प्रेमचंद का अप्राप्य साहित्य–1; भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली
2. डॉ. कमल किशोर गोयनका ;प्रेमचंद का अप्राप्य साहित्य–2; भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली
3. डॉ. कमल किशोर गोयनका ;प्रेमचंद कहानी रचनावली; साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
4. सं– देवेश कुमार . समीचीन : 13 (कमल किशोर गोयनका) अंक, मुम्बई
5. सं निरंजन क्षत्रिय .'माधवी' ;समावर्तन; उज्जैन म– वर्ष .प्र.2 अंक:8–रनवम्ब/2009
6. डॉ कमलकिशोर गोयनका .;प्रेमचंद नयी पहचान; अनिल प्रकाशन, नई दिल्ली
7. सं. मुरारीलाल त्यागी ; कल्पान्त ; दिल्ली ; वर्ष –37 , फरवरी 2009